UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182340

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81 S52P Accession No. H1090

Author शांति.

Title पगध्वनि.

This book should be returned on or before the date last marked below.

पगध्वनि

कुमारी शांति एम० ए०

अवध पब्लिशिंग हाउस
लखनऊ.

प्रकाशक
अवध पब्लिशिंग हाउस
लखनऊ.

सर्वाधिकार स्वरक्षित
मूल्य २)

Checked 1969

मुद्रक
पं० भृगुराज भार्गव
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स, लखनऊ.

(नेपथ्य से)

अपने और अपनी कविता के विषय में कुछ कहना सदैव आवश्यक भी नहीं रहता, समीचीन भी नहीं; शायद उचित भी न होता हो ; इसीलिए · · · · ·

तुमने बहुत सुनाई मानव की दुखभरी कहानी,
सुनती रही सदा बचपन से मैं भोली अनजानी,
आज उसी की मुग्ध-चेतना है मैंने पहचानी,
याद रही जो, लिखा उसे ही मेरी अच्छी नानी;
काव्य समझ लेना न तुम इस भोले खिलवार को,
भेंट न कह कोई हँसे मेरे बाल्य-दुलार को॥

कविता-क्रम

कविता			पृष्ठ
१—गीत मेरे आहों में बंद	...	...	१
२—यह दोष बहुत बुरा नहीं	...	...	२
३—व्यर्थ है मेरा नहीं प्रलाप	...	...	३
४—गीत, किसी से दूर, किसी के पास		..	४
५—जब यह सुना तो दुख हुआ	...	...	५
६—अब याद लाना है वृथा	...	...	६
७—आज मुझको अपने प्रति क्रोध	...	...	७
८—संतोष अब कितने दिनों	...	...	८
९—यह देखना कितना कठिन	...	.	९
१०—पीछे हटूँ! पीछे हटूँ!	...	..	१०
११—करेगी क्या यह दुनियाँ जान	...	...	११
१२—अब यह असंभव हो गया	...	..	१२
१३—यदि छोड़ दूँ आगे तुम्हें	...		१३
१४—अंतिम निमंत्रण आज है	...	..	१४
१५—साथी प्राण तुम्हारे साथ	...	.	१५
१६—इतने दिनों के ही लिए	...		१६
१७—यह सब किसी का और का	...	. .	१७
१८—तुम दूसरे की वस्तु हो	...	.	१८
१९—सब कुछ तुम्हारे ही लिए	...	. .	१९
२०—यह उपकार या अधिकार	...	..	२०
२१—मिलता है न सबको दान	...		२१
२२—पतझार बीता जा रहा	..		२२
२३—शोक भी हो तो कितनी बार		..	२३

कविता			पृष्ठ
२४—कौन सा न्याय ? कौन सा न्याय	...		२४
२५—विश्व से दूर किसी के पास	...	...	२५
२६—देना दोष बुरा लगता है	...	...	२६
२७—जान करके भी मैं अनजान	...	...	२७
२८—तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास	...	...	२८
२९—सत्य जो कुछ वह मुझको ज्ञात...		...	२९
३०—कब प्यार माँगे से मिला	...	...	३०
३१—जीत के पहले सदा ही पास आती हार है		...	३१
३२—बुरा नहीं जो हो जाता है	...	...	३३
३३—यह तो समझ का फेर है	...	...	३४
३४—मेरी निर्बलता मौन रही	...	...	३५
३५—साथी रात न चुप रहती है	...	...	३६
३६—देखो गिरता है आँसूकण	...	...	३७
३७—मान ली मैंने अपनी हार	...	...	३८
३८—अब यह बुरा नहीं लगता है	...	...	३९
३९—तब रोना भी व्यर्थ है	...	...	४०
४०—कितने दिनों के वास्ते	...	...	४१
४१—गलत कहने का कम अभ्यास	...	...	४२
४२—बुझ सकी नहीं हृदय की प्यास		...	४४
४३—यह सब कुछ क्षणों के बाद	...	...	४५
४४—जाने वाले जाओ	...	...	४६
४५—स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को		...	४७
४६—जन्म दिन आया भी तो व्यर्थ	...	...	४९
४७—जाता पुरातन वर्ष है	...	...	५०
४८—गीत लिखना अब है उपहास	...	...	५१

गीत मेरे आहों में बंद !

बंद ओठों में है मुसकान ;
किसी का मान, किसी के प्राण ;
भीख ले, देने को वरदान ;
स्वप्न की पंखुड़ियों में मौन, मलय की गलबाँहों में बंद !
गीत मेरे आहों में बंद !

प्यास जब स्वयं बनी जलजात ;
आँख जब स्वयं बनी बरसात ;
शाम सहसा बन आधी रात ;
भर रही अलियों में अनुभूति, तुष्टि, दे देकर के मकरंद !
गीत मेरे आहों में बंद !

देखती मुड़कर आता क्रोध ,
सामने हुआ पंथ अवरोध ;
पथिक से यह कैसा प्रतिशोध ?
चरण में विद्युत, सम्मुख लक्ष्य, प्रवासी पर राहों में बंद !
गीत मेरे आहों में बंद !

यह दोष बहुत बुरा नहीं !

यदि धर्म निज निभते चलें,
यदि कर्म निज निभते चलें,
यदि मर्म निज निभते चलें,
फल के लिये फिर भाग्य पर, संतोष बहुत बुरा नहीं !
यह दोष बहुत बुरा नहीं !

अन्याय जग का देखकर,
वर्षों रहे गुमसुम अधर,
हो जाय कंपित स्वर-प्रखर,
जो क्रांति कर दे विश्व में, वह रोष बहुत बुरा नहीं !
यह दोष बहुत बुरा नहीं !

मिटता मिटाता जो बढ़े,
जग से लड़े, मन से लड़े,
आदर्श पर दृढ़ हो अड़े,
सच पर पतिंगे सा जले, मदहोश बहुत बुरा नहीं !
यह दोष बहुत बुरा नहीं !

व्यर्थ है मेरा नहीं प्रलाप !

'क्षमा कर देना' यदि अपराध,
क्रोध कर लेना भी है पाप,
मौन रहना है कठिन सदैव, इसी से कर लेती संताप।
व्यर्थ है मेरा नहीं प्रलाप !

उठाती फूलों पर मैं हाथ,
टूट गिर पड़ते हैं अभिशाप,
किंतु वे भी दृग जल को चूम, शांत हो जाते अपने आप।
व्यर्थ है मेरा नहीं प्रलाप !

नापती संयम रही सदैव,
हाथ में लेकर यह ही माप,
'क्षमा कर देना' यदि अपराध, क्रोध कर लेना भी है पाप।
व्यर्थ है मेरा नहीं प्रलाप !

गीत, किसी से दूर, किसी के पास !

दूर उनसे जिनको अभिमान,
पास उनके जिनको अरमान,
गीत, किसी से दूर, किसी के पास !

दूर उनसे जिनको अभिमान,
पास उनके जिनको वरदान,
प्रीति, किसी से दूर, किसी के पास !

दूर उनसे जिनको अभिमान,
पास उनके जिनको अवसान,
जीत, किसी से दूर, किसी के पास !

जब यह सुना तो दुख हुआ !

डर कर क्षणिक उपहास से,
डर कर हृदय की प्यास से;
बस लक्ष्य कुछ ही दूर था, कुछ चल दिए पथ छोड़कर !
जब यह सुना तो दुख हुआ !

रोका, न रुक पाए अधर,
सोए रहे जो जन्म भर;
कर्तव्य कुछ ही दूर था, कुछ चल दिए व्रत तोड़कर !
जब यह सुना तो दुख हुआ !

बीते दिनों की याद में,
अफसोस में, अवसाद में,
आदर्श कुछ ही दूर था, कुछ चल दिए मुँह मोड़कर !
जब यह सुना तो दुख हुआ !

अब याद लाना है वृथा !

संयोग मन का भाव का,
जैसा नदी का नाव का,
या प्राप्ति और अभाव का,
फिर छूट जाने की यहाँ, फ़रियाद लाना है वृथा।
अब याद लाना है वृथा।

चलते बना चलती गयी,
बढ़ते बना बढ़ती गयी,
लड़ते बना लड़ती गयी,
फिर हार का या जीत का, अवसाद लाना है वृथा।
अब याद लाना है वृथा।

क्यों द्रोह सपनों से हुआ,
विद्रोह अपनों से हुआ,
उलझे हुये उन्मुक्त मन, उन्माद लाना है वृथा।
अब याद लाना है वृथा।

आज मुझको अपने प्रति क्रोध !

तुम्हारा पाकर हृदय उदार,
भर दिये सपनों के उपहार,
मोह के शूल सुमन कर भेंट, कर दिया मुक्त पंथ अवरोध !
आज मुझको अपने प्रति क्रोध !

अश्रु को दे न सकी मैं भाव,
व्यथा को दे न सकी मैं घाव,
दे गयी वह जिसके विपरीत, रही मैं करती सदा विरोध !
आज मुझको अपने प्रति क्रोध !

किंतु मुझको अब भी विश्वास,
अमिय भी दूँगी, दी यदि प्यास,
हुई हैं मुझसे जो कुछ भूल, कभी लूँगी निज से प्रतिशोध !
आज मुझको अपने प्रति क्रोध !

संतोष अब कितने दिनों ?

आधी कहानी शेष है,
आधी सुनानी शेष है,
अपने सलोने भाग्य को, दूँ दोष अब कितने दिनों ?
संतोष अब कितने दिनों ?

कोई किसी की याद कर,
सर्वस्व निज बरबाद कर,
अपना समझ भूले रहे, मदहोश अब कितने दिनों ?
संतोष अब कितने दिनों ?

है भूल कलियों की न कम,
है भूल अलियों की न कम,
पर सोचती हूँ यदि करूँ तो रोष अब कितने दिनों ?
संतोष अब कितने दिनों ?

यह देखना कितना कठिन !

यदि शांति कर शृंगार ले,
यदि क्रांति कर शृंगार ले,
यदि प्रकृति का भोला सरल शृंगार कुछ का कुछ बने !
यह देखना कितना कठिन !

अनुराग यदि अधिकार ले,
वैराग यदि अधिकार ले,
नर सृष्टि का पावन प्रथम अधिकार कुछ का कुछ बने !
यह देखना कितना कठिन !

यदि चेतना साकार हो,
यदि प्रेरणा साकार हो,
मेरे हृदय में जो बसा, साकार कुछ का कुछ बने !
यह देखना कितना कठिन !

पीछे हटूँ ! पीछे हटूँ !

लो चीख़ता चिंघाड़ता,
रिपु-सिंधु का उर फाड़ता,
करने किसी को लय, स्वयं तूफ़ान आगे आ रहा !
पीछे हटूँ ! पीछे हटूँ !

प्रतिमा विषादों से सनी,
बैठी रही कुछ अनमनी,
आकर पुजारी ने कहा, "बलिदान आगे आ रहा"।
पीछे हटूँ ! पीछे हटूँ !

हैं खोजते, पाते न पर,
मेरी नज़र, मेरे अधर,
कैसे बढ़ूँ जब स्वप्न का, शमशान आगे आ रहा ?
पीछे हटूँ ! पीछे हटूँ !

करेगी क्या यह दुनियाँ जान ?

किसी के कर्म मुझे क्यों धर्म ?
किसी का हृदय मुझे क्यों मर्म ?
किसी के आँसू क्यों अभिशाप ? किसी के आँसू क्यों वरदान ?
करेगी क्या यह दुनियाँ जान ?

किसी का नीड़ मुझे आकाश ,
किसी की शक्ति मुझे विश्वास ,
बन चुके क्यों मेरे हित लक्ष्य, किसी के मन के कुछ अरमान ?
करेगी क्या यह दुनियाँ जान ?

जहाँ थे औरों के भगवान ,
झुक गया मेरा भाल-महान ,
किंतु मेरा मंदिर क्यों हाय, हुआ है लाखों को शमशान ?
करेगी क्या यह दुनियाँ जान ?

अब यह असंभव हो गया।

झुक कर पुनः मैं भार लूं,
झुक कर पुनः मैं हार लूं;
सर्वस्व दे जग को चुका,
उस हाथ पर अंगार लूं;
जलती रही हूँ जिस तरह, वैसे सदा जलती रहूँ!
अब यह असंभव हो गया।

क्या हो रही देखा नहीं;
क्या खो रही देखा नहीं;
संसार काटेगा कभी,
क्या बो रही देखा नहीं;
चलती रही हूँ जिस तरह, वैसे सदा चलती रहूँ!
अब यह असंभव हो गया।

ठोकर लगी संघर्ष कह,
जब गिर पड़ी उत्कर्ष कह;
धोखा स्वयं को दे चुकी,
अवसाद को आदर्श कह;
छलती रही हूँ जिस तरह, वैसे सदा छलती रहूँ!
अब यह असंभव हो गया।

यदि छोड़ दूँ आगे तुम्हें !

भय मान लूँ मैं शूल से,
भय मान लूँ अनुकूल से,
भय मान लूँ प्रतिकूल से,
इतने दिनों तक, आज तक, अपमान सहना है वृथा !
यदि छोड़ दूँ आगे तुम्हें !

मैं प्यास तुम पानी बने,
मैं भाव तुम वाणी बने,
मैं मुक्ति तुम प्राणी बने,
फिर भक्ति निज को, औ' तुम्हें, भगवान् कहना है वृथा !
यदि छोड़ दूँ आगे तुम्हें !

आँसू न, जो जीवन न दे,
वह घन न जो सावन न दे,
कोकिल न, जो मधुवन न दे,
पाषाण सा निश्चय न हो, पाषाण रहना है वृथा !
यदि छोड़ दूँ आगे तुम्हें !

अंतिम निमंत्रण आज है !

वरदान पाने के लिए,
निर्माण पाने के लिए,
युग-युग तुम्हारे पास पंछी नीड़ में आता रहा ;
अंतिम निमंत्रण आज है !

लघु श्वास के दो तार पर,
विश्वास के आधार पर,
जड़ विश्व के चेतन नियम हँस भूल ठुकराता रहा ;
अंतिम निमंत्रण आज है !

संतोष पलकों से ढुलक,
बहता रहा था शाम तक,
नीरव निशा के शून्य में दृग-सिंधु यह गाता रहा ;
अंतिम निमंत्रण आज है !

साथी प्राण तुम्हारे साथ !

जिनको पा लेना है पाप,
जिनको खो देना संताप,
मुझसे दूर किसी के पास, वे वरदान तुम्हारे साथ !
साथी प्राण तुम्हारे साथ !

कर देते नर जिन्हें महान,
पुजकर बन जाते भगवान,
कवि के मंदिर के आधार, उर-पाषाण तुम्हारे साथ !
साथी प्राण तुम्हारे साथ !

जाने किस कारण से रूठ,
चरण गए हैं जिनसे छूट,
जा न सके हैं, फिर भी दूर, वे मेहमान तुम्हारे साथ !
साथी प्राण तुम्हारे साथ !

इतने दिनों के ही लिए !

निश्चय किसी का तोड़कर,
परिचय किसी से जोड़कर,
निज जीत, जग की हार पर, अभिमान मैंने कर लिया;
इतने दिनों के ही लिए !

कुछ धूप पर, कुछ छाँह पर,
कुछ चाह पर, कुछ आह पर,
निज प्रीति, जग के प्यार पर, अभिमान मैंने कर लिया;
इतने दिनों के ही लिए !

बस सत्य इसको मानकर,
कृतकृत्य निज को जानकर,
निज विश्व पर, संसार पर, अभिमान मैंने कर लिया;
इतने दिनों के ही लिए !

यह सब किसी का और का !

यह मान का, सम्मान का,
यह दान का, वरदान का,
जो श्रेय, और प्रयास है, वह व्रत किसी का और का !
यह सब किसी का और का !

जलजात का, मकरंद का,
अलि-राशि पर प्रतिबंध का,
जो सत्य है, इतिहास है, निर्मित किसी का और का !
यह सब किसी का और का !

निशि चुप रही, शशि ने कहा,
तम व्यर्थ संध्या ने सहा,
जो भूमि है, आकाश है, वह पथ किसी का और का !
यह सब किसी का और का !

तुम दूसरे की वस्तु हो !

जब आ घिरे फिर स्वाति-घन,
चुपचाप बह निकली पवन,
रोती हुई उस सीप को छू मौन सागर कह उठा—
"तुम दूसरे की वस्तु हो" !

सर्वस्व दे पाता न कुछ,
सब कुछ, मगर नाता न कुछ,
चुपचाप अपलक दृढ़ व्रती से अर्च्य पत्थर कह उठा—
"तुम दूसरे की वस्तु हो"

रोदन विदाई के लिये,
गायन विदाई के लिये,
आशीष देकर के तभी, करुणार्द्र सब घर कह उठा—
"तुम दूसरे की वस्तु हो" !

सब कुछ तुम्हारे ही लिए !

है भाग्य में जो कुछ बदा,
दुख-सुख, गरीबी संपदा,
सिर पर मुसीबत जिस समय जो आ पड़ी, सहना पड़ा !
सब कुछ तुम्हारे ही लिए !

निष्फल किसी की कर शपथ,
आगे बढ़ी तो अग्नि-पथ,
पीछे हटी तो सिंधु, फिर जलना पड़ा, बहना पड़ा !
सब कुछ तुम्हारे ही लिए !

पहले किया मधु का सृजन,
फिर विष पिया, फिर रक्तकण,
जीवन न मिल पाया यहाँ, जीवित मगर रहना पड़ा !
सब कुछ तुम्हारे ही लिए !

यह उपकार या अधिकार ?

पावन स्नेह का पा स्रोत,
मृदु मरुभूमि ओत-प्रोत,
देती है अमर उन्मुक्ति, अथवा रिक्त कारागार !
यह उपकार या अधिकार ?

भावों ने किया चीत्कार,
घावों ने किया चीत्कार,
यह है कर्म का फल या किसी के मर्म का है भार !
यह उपकार या अधिकार ?

तुमको कर चुकी मैं प्राप्त,
इतना ही नहीं पर्याप्त,
पहले पूछ तो लूँ, दे चुकी हूँ मूल्य, या कि उधार !
यह उपकार या अधिकार ?

मिलता है न सबको दान।

वाणी को सदा कब राग,
मधु को कब सदैव पराग,
मन को कब सदा अनुराग,
जाने क्यों न इसको मानता है यह हृदय नादान!
मिलता है न सबको दान।

कुछ तो हैं कमल में बंद,
मिलता पर नहीं मकरंद,
करते पान कुछ स्वच्छंद,
कुछ हैं माँगते अभिशाप, पर पाते सदा वरदान!
मिलता है न सबको दान।

पथ का आदि, पथ का अंत,
मधु पतझार, शुष्क वसंत,
दोनों ही अपूर्ण, अनंत,
सबको ही मिलेगा नाश, चाहे हो नहीं निर्माण!
मिलता है न सबको दान।

पतझार बीता जा रहा !

मधुमास कुछ कहता चला ;
मधुवात चुप बहता चला ;
इनके बहाने ही किसी का प्यार बीता जा रहा !
पतझार बीता जा रहा !

जलता रहा, बोला न कुछ ;
चलता रहा, बोला न कुछ ;
लो पोंछने को अश्रु-जल अंगार बीता जा रहा !
पतझार बीता जा रहा !

पाना किसी को, नाश ले ;
खोना किसी को, पास ले ;
कर्तव्य के दृढ़ बोझ से अधिकार बीता जा रहा !
पतझार बीता जा रहा !

शोक भी हो तो कितनी बार !

नये हैं मुझे नहीं अभिशाप,
स्वर्ग के पुण्य, भूमि के पाप;
चल चुकी इतने दिन इस भाँति,
चली जाऊँगी अपने आप;
दृष्टि में मेरी मेरा लक्ष्य, रोक भी लो तो कितनी बार !
शोक भी हो तो कितनी बार !

नित्य रवि आता लेकर शूल,
रात्रि कलि प्राची विकसित फूल;
चल चुकी इतने दिन इस भाँति,
नहीं हो पाती है अब भूल;
नित्य ही मिलते हैं अंगार, नित्य ही मिलता पारावार !
शोक भी हो तो कितनी बार !

शपथ ले बढ़ना है उपहास,
चरण पर हो न जिसे विश्वास;
चल चुकी इतने दिन इस भाँति,
पंथ भी आ जाता है पास;
दृष्टि में मेरी मेरा लक्ष्य, रोक भी लो तो कितनी बार !
शोक भी हो तो कितनी बार !

कौन सा न्याय ? कौन सा न्याय ?

शांतिमय जीवन किया व्यतीत,
सही सब हार, सही सब जीत;
सह सकूँगी मैं कब तक किंतु जगत का अपने प्रति अन्याय ?
कौन सा न्याय ? कौन सा न्याय ?

तज दिया क्रोध, तजा प्रतिशोध,
किया कब जग का पथ अवरोध;
विश्व से समझौते का किंतु शेष अब कोई नहीं उपाय !
कौन सा न्याय ? कौन सा न्याय ?

प्राप्त है एक मुझे भी शक्ति,
किसी के प्रति मेरी अनुरक्ति;
जो देती है विश्वास नहीं मैं दुनियाँ में असहाय !
कौन सा न्याय ? कौन सा न्याय ?

विश्व से दूर किसी के पास !

यही परिचय मेरा पर्याप्त,
व्यर्थ जीवन हो गया समाप्त;
मुझे शशि कर देने के हेतु नहीं मिल पाया नीलाकाश !
विश्व से दूर किसी के पास !

आम्र के इन कुंजों के पार,
कौन वर्षों से रहा पुकार;
पहुँच जाऊँ केवल क्षण चार नहीं इतना भी है अवकाश !
विश्व से दूर किसी के पास !

बाँटता रहता कौन प्रसाद,
मौन रह कर, कर करके याद;
दे रहा सबको तो वह प्यार, मुझे मिल जाता है सन्यास !
विश्व से दूर किसी के पास !

देना दोष बुरा लगता है।

मुक्त न मैं, यदि तुम अपराधी,
किंतु तुम्हारी विपदा आधी,
बाँट न पाऊँगी जीवन में इसका होश बुरा लगता है।
देना दोष बुरा लगता है।

थोड़ी सी गलती पर चिढ़कर,
तुमको कोस लिया था जीभर,
मौन तुम्हारा, मेरा उस दिन करना रोष बुरा लगता है।
देना दोष बुरा लगता है।

अस्तु, आज युग बीत चुका है,
मुझसे रूठ अतीत चुका है,
आगे की आगे सोचूँगी यह संतोष बुरा लगता है।
देना दोष बुरा लगता है।

जानकर के भी मैं अनजान !

कि जिस दिन तक है जिसका काम ,
उसी दिन तक यह दुआ-सलाम ;
तभी तक आवभगत, अनुरक्ति, तभी तक है मेरा सम्मान !
जानकर के भी मैं अनजान !

प्राप्ति से दूर, कर्म के पास ;
मुक्ति से दूर, धर्म के पास ;
तर्क से दूर मर्म के पास, लीन होंगे ये मेरे प्राण।
जानकर के भी मैं अनजान !

देह पर इतना अत्याचार ,
गेह पर इतना अत्याचार ;
सत्य चातक है क्षम्य न
विश्व-मेह पर इतना अत्याचार ;
बुझा लूँ क्या मैं अपनी ज्योति विश्व को करके दीप प्रदान !
जान करके भी मैं अनजान !

तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास !

मिली थी कुछ दिन हेतु उधार,
किया मैंने भी तो सत्कार;
आज ले लो तुम अपनी देन, और यह मेरा अमर प्रयास !
तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास !

स्वाति-घन हँसे, हुए चुपचाप,
हँसे फिर बोले अपने आप;
हुआ क्या नहीं अभी तक पूर्ण, तृषित चातक तेरा अभ्यास !
तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास !

नहीं सह पाया तप का भार,
उतर ही आया शशि सुकुमार;
कह गया कानों में आकाश, "तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास" !
तुम्हारी वस्तु तुम्हारे पास !

सत्य जो कुछ वह मुझको ज्ञात !

किसे मुझपर है कितना प्यार,
किसे मुझपर कितना अधिकार,
कौन सी व्यथित हृदय की चीख़, कौन सी मुँह देखे की बात !
सत्य जो कुछ वह मुझको ज्ञात !

कौन कर सकता कितना त्याग,
स्वार्थ किसमें, किसमें वैराग,
पूछने लगी एक दिन मुक्त सजल पंखों से आधी रात !
सत्य जो कुछ वह मुझको ज्ञात !

तिमिर का बिजली से शृंगार,
सुमन का तितली से शृंगार,
किया क्यों करती है; चुपचाप उदधि से उठ करके बरसात !
सत्य जो कुछ वह मुझको ज्ञात !

कब प्यार माँगे से मिला !

मिटने मिटाने जो चला ,
जलने जलाने जो चला ,
फैला चुका जो हाथ कब अंगार माँगे से मिला !
कब प्यार माँगे से मिला !

कन्धे झुका जो झुक गया ,
पग टेक कर जो रुक गया ,
ऐसे प्रवासी प्राण को, कब भार माँगे से मिला !
कब प्यार माँगे से मिला !

बस दो क़दम फिर प्राप्ति है ,
अवसाद और समाप्ति है ,
धर हाथ ले क्षणभर, नहीं आधार माँगे से मिला !
कब प्यार माँगे से मिला !

जीत के पहले सदा ही पास आती हार है !

पास आया लक्ष्य तो
सहसा अँधेरा घिर गया,
मिल गया जब नीड़ तब ही
मुक्त पंछी गिर गया,
मैं समझती प्रति सुबह ही रात का आधार है !
जीत के पहले सदा ही पास आती हार है !

देखकर छलपूर्ण जग को
डर न भोले मन अभी,
देख नश्वरता न झुक जा
चिर तृषित जीवन अभी,
क्योंकि अमृत में भरा विष का बुझा अंगार है !
जीत के पहले सदा ही पास आती हार है !

जो किसी के हाथ में
ज़ंजीर सा बन अड़ गया,
वह मुझे आगे बढ़ाता
और बढ़ता बढ़ गया,

है विफलता वह किसी की जो मुझे आधार है !
जीत के पहले सदा ही पास आती हार है !

आज पा करके विवशता
मिल रही यह सांत्वना ,
अब नहीं है दूर ज़्यादा
पूर्ण-सी है साधना ,
कल मिलेगा, आज इससे लुट रहा अधिकार है !
जीत के पहले सदा ही पास आती हार है !

बुरा नहीं जो हो जाता है !

बुरा नहीं दुख को दुख कहना ,
बुरा नहीं दुख पर दुख सहना ,
बुरा नहीं कवि, निज वाणी में जो अपने सुख दुख-गाता है !
बुरा नहीं जो हो जाता है !

बुरा नहीं क्षणभर का बंधन ,
बुरा नहीं है नश्वर जीवन ,
आख़िर मानव का जगती से अमर नहीं कोई नाता है !
बुरा नहीं जो हो जाता है !

वर्ष हर्ष ले भी जाते हैं ,
वर्ष हर्ष दे भी जाते हैं ,
लेता है देने को, कोई यह कह मुझको समझाता है !
बुरा नहीं जो हो जाता है !

यह तो समझ का फेर है !

मंज़िल भले ही दूर हो,
मंज़िल भले ही पास हो;
मैं जानती हूँ किंतु सबको,
लक्ष्य तो मिलता नहीं;
हूँ पूछती फिर भी कि कितनी देर; कितनी देर है ?
यह तो समझ का फेर है !

मधुमास चाहे दूर हो,
मधुमास चाहे पास हो;
मैं जानती हूँ प्रति कली
खिलती, सुमन खिलता नहीं;
हूँ पूछती फिर भी कि कितनी देर; कितनी देर है ?
यह तो समझ का फेर है !

वरदान चाहे दूर हो,
वरदान चाहे पास हो;
मैं जानती हूँ किंतु वह
हर एक को मिलता नहीं;
हूँ पूछती फिर भी कि कितनी देर; कितनी देर है ?
यह तो समझ का फेर है !

मेरी निर्बलता मौन रही !

जब पंख थके आधे मग में,
अवशेष न शक्ति रही पग में;
साधना पूर्ण होने पर भी फल को लुट जाता हुआ देख !
मेरी निर्बलता मौन रही !

देखा सुख मैंने, शोक बहुत,
तम मिला, मिला आलोक बहुत;
फिर भी जग जीवन को अतृप्ति के गीत सुनाता हुआ देख !
मेरी भावुकता मौन रही !

दो क़दम हटूँ तो है विनाश,
दो क़दम हटूँ तो अट्टहास,
परवश मुझको मेरे पथ पर गुम सुम रुक जाता हुआ देख !
मेरी व्याकुलता मौन रही !

साथी रात न चुप रहती है !

नभ के नीलेपन में भरकर
निशि लिखती तारों के अक्षर
चुपके चुपके, पर अधरों की मृदु मधुवात न चुप रहती है !
साथी रात न चुप रहती है !

देख किसी का सूना उपवन,
सिसक पड़ा उमड़ा सावन घन,
गिरे बूँद पर इसके पहले ही बरसात न चुप रहती है !
साथी रात न चुप रहती है !

रुँधा गला, दुर्बल मेरा स्वर,
प्रश्न हज़ारों, एक न उत्तर,
मुझको सूने में पा मेरे मन की बात न चुप रहती है !
साथी रात न चुप रहती है !

देखो गिरता है आँसूकण !

कहीं हार जाये न किसी से ,
कहीं प्यार पाए न किसी से ,
इस डर से छुपकर भगता है, दूर किसी कवि का भावुक मन !
देखो गिरता है आँसूकण !

कहीं किसी में आग लगाने ,
कहीं किसी का भाग्य जगाने ,
उपवन में शबनम कण बनकर, मरुथल में बन मृग का जीवन !
देखो गिरता है आँसूकण !

इसको झेल नहीं जग पाता ,
इससे खेल नहीं जग पाता ,
साहस लिए खड़ा है फिर भी मेरा दुर्बल दिल पत्थर बन !
देखो गिरता है आँसूकण !

मान ली मैंने अपनी हार !

नहीं अपना कहने में गर्व,
नहीं अपना सकने में गर्व,
हुआ कब यह निर्बल अस्तित्व किसी के गौरव का आधार !
मान ली मैंने अपनी हार !

देखकर मुझको अपने साथ,
हुआ उन्नत न किसी का माथ,
खेलती रही विश्व में, किंतु हज़ारों की बनकर खिलवार !
मान ली मैंने अपनी हार !

हुई मैं जिसके जितने पास,
किया उसने उतना उपहास,
किंतु मुझको भी करना दूर न हो पाया जग को स्वीकार !
मान ली मैंने अपनी हार !

अब यह बुरा नहीं लगता है !

मैं बढ़ती जाती हूँ पथ पर,
कुसुम लुटाकर, रखकर पत्थर ;
कोई क्यों आगे आता है; कोई क्यों ठुकरा देता है ?
अब यह बुरा नहीं लगता है !

भले बुरे का ज्ञान मुझे भी,
जग की है पहिचान मुझे भी,
मेरे सच को झूठ बताकर, कोई क्यों समझा देता है ?
अब यह बुरा नहीं लगता है ?

मेरा पथ अब भी परिचित है,
लक्ष्य अभी तक तो निश्चित है,
मुझको कुछ का कुछ कह करके, कोई क्यों मुसका देता है ?
अब यह बुरा नहीं लगता है ?

तब रोना भी व्यर्थ है !

जब हँसने के भी लिये
साधन ही बाक़ी न हो,
मधु हो, मधुवन और मधु-
ऋतु हो, पर साक़ी न हो;
दुर्बल श्वासें ही दुखद जीवन का आधार हो !
तब रोना भी व्यर्थ है !

नीड़ छोड़ कर जब विहग
उड़ जाये आकाश में,
शून्य गगन हो, रिक्त पथ,
मुक्त पवन हो पास में,
सहसा ही प्रति शशि किरण टूट पड़े अंगार हो !
तब रोना भी व्यर्थ है !

लौह-शृंखला के निकट
खड़े हुये दो प्राण हों,
बलिदानी हो एक, तो
एक स्वयं बलिदान हो;
बाहर वाले के लिये जग यदि कारागार हो !
तब रोना भी व्यर्थ है !

कितने दिनों के वास्ते ?

अवसाद सपनों पर करूँ,
फरयाद अपनों पर करूँ;
कितने दिनों के वास्ते ?

विश्वास मैं अपना लिखूँ,
उपहास मैं अपना लिखूँ,
इतिहास मैं अपना लिखूँ,
कितने दिनों के वास्ते ?

अरमान मन की भूल है,
अभिमान मन की भूल है;
करना किसी को दिव्यतम—
भगवान मन की भूल है;
इस भूल को वरदान मैं समझी, समझती ही रहूँ !
कितने दिनों के वास्ते ?

गलत कहने का कम अभ्यास !

जहाँ पर जो मेरा अधिकार,
जहाँ पर जो मेरा व्यापार,
वही मुझको है अंगीकार,
व्यर्थ अपनी सीमाएँ तोड़, गलत रहने का कम अभ्यास !
गलत कहने का कम अभ्यास !

जिधर गति, मेरा उधर बहाव,
प्राप्ति कुछ, किंतु अनेक अभाव,
बहुत सी औषधियाँ, कुछ घाव,
भूलकर लक्ष्य, भुला निज शक्ति, गलत बहने का कम अभ्यास !
गलत कहने का कम अभ्यास !

सहूँगी कर्मों का परिणाम,
सहूँगी धर्मों का परिणाम,
सहूँगी मर्मों का परिणाम,
नहीं जिसका मुझपर दायित्व, गलत सहने का कम अभ्यास !
गलत कहने का कम अभ्यास !

छिपा करके कुछ अपने दोष,
और कुछ औरों पर कर रोष,
स्वयं पा लेते हैं संतोष,
किंतु अपने को दोषी देख, गलत कहने का कम अभ्यास!
गलत कहने का कम अभ्यास!

बुझ सकी नहीं हृदय की प्यास !

बहुत दिन तक करके विश्वास ,
बहुत दिन तक करके उपहास ,
बहुत दिन तक रह करके दूर, बहुत दिन तक रह करके पास !
बुझ सकी नहीं हृदय की प्यास !

बहुत दिन किया किसी को प्यार ,
बहुत दिन मन पर कर अधिकार ,
बहुत दिन तक करके शृंगार, बहुत दिन तक लेकर संन्यास !
बुझ सकी नहीं हृदय की प्यास !

बहुत दिन नीड़ों का निर्माण ,
बहुत दिन प्राणों का अवसान ,
बहुत दिन तक पाई है भूमि, बहुत दिन पाया है आकाश !
बुझ सकी नहीं हृदय की प्यास !

यह सब कुछ क्षणों के बाद !

जब तक सुन न पाऊँ न्याय,
कैसे मान लूँ निरुपाय,
कर लूँ त्याग से क्योंकर वृथा इस जन्म का अवसाद !
यह सब कुछ क्षणों के बाद !

काया से करुण विद्रोह,
माया से करुण विद्रोह,
जड़ से, और नर की मूक
छाया से करुण विद्रोह;
वह परिणाम है अनुमान, जिस पर शेष वाद-विवाद !
यह सब कुछ क्षणों के बाद !

या विश्वास, या उपहास,
या निर्माण, अथवा नाश,
मिलता है अमर कल्याण, या अपवाद, या उन्माद !
यह सब कुछ क्षणों के बाद !

जाने वाले जाओ !

मंजिल है न यद्यपि पास,
मन में ले बढ़ो विश्वास,
पूरा कर अपूर्ण प्रयास, आ सको तो आओ !
जाने वाले जाओ !

पथ में प्राप्त हो मधुमास,
अलि का गान, कलि का हास,
तारों से भरा आकाश, उनसे मन बहलाओ !
जाने वाले जाओ !

जिसका हो न युग युग नाश,
लिखना तुम वही इतिहास,
फिर लेकर स्वयं संन्यास, याद अमर बन जाओ !
जाने वाले जाओ !

स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को !

साँझ के तारे किसी को,
रात कुछ को;
ग्रीष्म की अभिशापमय
बरसात कुछ को;
जीत कुछ को, जीत में भी हार कुछ को!
स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को !

एक पगध्वनि में छिपी
ज़ंजीर कितनी,
एक लघु क्षण में छिपी है
पीर कितनी,
मुक्ति कुछ को देन है; व्यापार कुछ को!
स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को !

सब दिया, उनको मिला है
शांति का वर;

शांति वह, जिस पर कि
जग से क्रान्ति निर्भर,
क्रांति वह, जलनिधि कभी; अंगार कुछ को!
स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को!

वे किसी के भी नहीं
जग के हुये जो,
लक्ष्य उनको है नहीं
मग के हुये जो;
प्राप्ति है उपहार कुछ को; भार कुछ को!
स्नेह का अधिकार कुछ को; प्यार कुछ को!

जन्म दिन आया भी तो व्यर्थ !

—

कह रहे इक्किस वर्ष पुकार,
कि हम आए हैं कितनी बार,
किन्तु पाते हैं तुम्हें सदैव, सदा सा ही निर्बल असमर्थ !
जन्म दिन आया भी तो व्यर्थ !

कि यह कैसा आदान प्रदान,
मिले अभिशाप, दिये वरदान,
कि प्रतिपल असफलता, आपत्ति, और अपवाद, विषाद, अनर्थ !
जन्म दिन आया भी तो व्यर्थ !

पूर्ण होगा न कभी इतिहास,
भूमि होगी न कभी आकाश,
काव्य से आ पूछेगा सत्य, कि आख़िर जीवन का क्या अर्थ !
जन्म दिन आया भी तो व्यर्थ !

जाता पुरातन वर्ष है !

दुर्भाग्य ले, सौभाग्य ले,
कुछ प्राप्ति ले, वैराग्य ले,
संतोष यह अब तो हृदय में कुछ नया आदर्श है !
जाता पुरातन वर्ष है !

ठोकर लगी, गिरने लगी,
मुँह फेर कर फिरने लगी,
सहसा किसी से आ कहा; लो सामने उत्कर्ष है !
जाता पुरातन वर्ष है !

उन्मुक्ति आई है नई,
अनुरक्ति आई है नई,
जितनी अधिक है शक्ति, उतना ही अधिक संघर्ष है !
जाता पुरातन वर्ष है !

गीत लिखना अब है उपहास !

सत्य हो क्यों भावों में व्यक्त ?
मर्म हो क्यों घावों में व्यक्त ?
कहाँ है व्यथित हृदय की पीर, कहाँ शब्दों का हास विलास !
गीत लिखना अब है उपहास !

करूँ क्यों आसव भला प्रदान ?
करूँ क्यों भला अमिय का दान ?
क्योंकि तूली से कहीं पवित्र, सजग-चरणों का स्वतः प्रयास !
गीत लिखना अब है उपहास !

देख इक्किस पतझड़, मधुमास,
हो चुका मुझको है विश्वास,
धर्म कह, भ्रम देने से मान्य; कर्म से ले लेना संन्यास !
गीत लिखना अब है उपहास !